

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक



प २२७ (२७)

ग्रंथ नाव

विषय मराठी काव्य.

मराठी काव्य

YJE/V 224  
226

रंगनाथीशीव्या गरीयान्त

पदे



88-48-2590

मराठी काव्य

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय श्रीराम मुनीष  
श ग सारंग ॥

॥ शत्रुभोला नाथ ॥ चक्र त्री सुव  
॥ ली चोहात ॥ ६॥ भाळ नाग  
॥ नाकुडं ली गडे ॥ वामागे  
॥ गीरी मा न सात ॥ १॥  
॥ आद्यावर न नी उपर  
॥ टोष क डी ॥ माथा गंगा  
॥ जग बी राजत ॥ २॥ भागी  
॥ रथी के प्रभु कैलास पती  
॥ आगे आगे लगाय बभ्रुत ॥  
॥ ३॥ छछ

(2)

॥ पद ॥

ब व

॥ ये शोदतु झाकानमपदरी

॥ धरनि या मागवत सदा

॥ ७ ॥ मधुरे स्त्री जालात यावु

॥ दोनी वे ही यत्त मज्जान

॥ १ ॥ सावळा सुद्धंदरपी

॥ त पीताबर ॥ मेधा ये साया

॥ चावान ॥ २ ॥ के होर जाळी

॥ टीळक सोभत ॥ दोळे मो

॥ मोडी जान ज्ञान ॥ ३ ॥ ज्ञातु

॥ न देत या यमुने च्या तीरा

॥ फीरत रे ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥

(2A)

॥ आचरी ॥ जी या मुर

॥ ली वाडी वात ॥ कुडुंल सो

॥ ज्ञात सेवान ॥ ५ ॥ मयौर

॥ मुगुट सोभत माया नासी

॥ कती ल पुष्प समान ॥ ६ ॥

॥ आगीरची चाप्रभुत या यमु

॥ ने चेतीरी ॥ वेनु वाजवी गावे

॥ तान ॥ ७ ॥ छ छ

॥ पद ॥

॥ समा गावारे शम गावारे ॥ ८ ॥

॥ ध्याती ज या प्रती नेद व्याप्ती

॥ शुती ॥ वांज सुत वर दम

॥ पी<sup>(3)</sup>ध्या वारे ॥ १ ॥ शो ध्या हा

॥ म की मार्ग धरा दृढ संत सं

॥ ग ॥ फोला हा वी श ये रं ग

॥ फोला वार ॥ २ ॥ सो हा हे वी श

॥ घं चार सा ध्या म ग नी ग म सा

॥ २ ॥ आ मी र थी चा प्र मुरा म

॥ ध्या वारे ॥ ३ ॥ धु धु धु ॥ ध ॥

॥ पद ॥

॥ हा री म ज का स सी ला तु नी क

॥ री पार ॥ ध ॥ दु स्तर हा म व

॥ सी धु लं बु धी चा पु ले चर

॥ नी दे ई

॥ का म को

॥ री ॥ १ ॥ ग ॥ म ज सी बा पा

॥ २ ॥ २ ॥ आ मी र थी तु ज से र न

॥ बा ली से ॥ म व सी धु क री पार

॥ ३ ॥ ध ॥ पद ॥

॥ शि द्ध सर ता ॥ नी द द्वा जाला ॥ को

॥ ठे सा मा व ला सां ग रा था ॥ १ ॥

॥ पा द वी ण भे द ॥ भे द वी ण ना द

॥ जा ये वि ण ग ज र ॥ कै र्वा जाला

॥ २ ॥ ये क ची मा हो री ॥ वी रा जी

॥ न ली ॥ ३ ॥ न आ ही र्वा त ल ते ॥



॥११॥

॥ का दाही चळे मा पदा र्थी मीळे ना ॥ मना  
॥ व्या कळे ना ज मा कळे ना ॥ मसीवी  
॥ वळे ना गती नीवळे ना ॥ स दो दी त व्या  
॥ मा तळे मा मळे ना ॥ १२ ॥ छ छ छ  
॥ उ द ग ने ग ए ऐ क व न्या परी ॥ व्या नुर  
॥ ऐ ध र ने न घ डे क री ॥ व्या ग नी ता ग नी  
॥ क व नु व्या से ॥ ज री द या पुर ती त री  
॥ से ॥ १३ ॥

॥ व्या व जी प व नी डी व नी पु व नि ॥ रघु  
॥ रा ज दी से द ह नी ग ह री ॥ व्या त वी वी  
॥ त वी सु त वी वी पु त वी ॥ रघु रा ज दी  
॥ से व्या क व स क व ॥ १४ ॥

॥ ज ना म न ध ना ध ना ध न व ना ॥ व रा प  
॥ र त ना त्र ना म ना ॥ रा त रा व ना  
॥ ना द ट व ॥ रा व्या व स रा स्य  
॥ ना म र्ग व र ॥

॥ घ की त म ना ॥ रा त र वा सी ॥  
॥ स क व च ना च न गु ज नी ग मा सी ॥  
॥ स क व सु ना सु न ना ज वी ळा सी ॥  
॥ अ मी स दा चु क ले गु ए ना सी ॥ छ

॥१६॥

॥ क री क री त न क नी ध न क री ॥  
॥ ध री ध री त ध री न ध री ध री न ध री  
॥ स दा सं त त व दे न व दे न व दे ॥ प दा टा  
॥ नी प दे न प दे न प दे ॥ १७ ॥  
॥ मी ध्या नी चा न नी ज सा न वी चा न ए  
॥ हे ॥ व्या न त सं त मु क्त त रो धु नी पो  
॥ हे ॥ वी स्वा ले म न स ले चु क ले त या  
॥ ल ॥ ची द्रु प ते उ म ग ले चु क ले त या  
॥ ल ॥ ॥ १८ ॥

श्री राम इत्येवम

सदानीं पीता ॥ प्राकृत साग नवा  
ता ॥ न देव प्रणे ॥ २० ॥ व्याष्टा दश  
ध्याय हा ॥ श्री कृष्ण बार्धन  
मसू ॥ सवे ॥ ॥





## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com